INTRODUCTORY MACROECONOMICS

UNIT 1 National Income & Related Aggregates (Part - 2)

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

- Maths
- Science
- English
- Sst

11th & 12th

- Pol. Science
- History
- Economics
- Accounts
- Maths
- English
- sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti

वस्तुओं का वर्गीकरण

प्रथम वर्गीकरण
- उपभोक्ता वस्तुएँ
- पूंजीगत वस्तुएँ

द्वितीय वर्गीकरण
- उत्पादक वस्तुएँ

तृतीय वर्गीकरण
- अंतिम वस्तु
- मध्यवर्ती वस्तु

उपभोक्ता वस्तु / Consumer goods

👉 वे वस्तुएँ उपभोक्ता वस्तुएँ कहलाती हैं, जो -
- **मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए प्रत्यक्ष रूप से उपयोग की जाती हैं**
- अंतिम उपभोग के लिए उपलब्ध हैं
- उदाहरण - घरेलू उपभोग वस्तुएँ

@vidyadrishti
विद्या दृष्टि

👉 **उपभोग व्यय**
- उपभोक्ता वस्तुओं पर व्यय को उपभोग व्यय कहते हैं।

👉 **महत्व**
- उपभोक्ता वस्तुओं के अधिक उत्पादन से लोगों के कल्याण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

👉 **इन्हें 4 श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है**:-
(1) टिकाऊ उपभोग वस्तुएँ (Durable Consumption goods)
(2) अर्ध टिकाऊ उपभोग वस्तुएँ (Semi durable consumption goods)
(3) गैर टिकाऊ वस्तुएँ (Non durable goods)
(4) सेवाएँ(services)

टिकाऊ उपभोग वस्तुएँ
- कई वर्षों तक उपयोग
- बार - बार प्रयोग
- अपेक्षाकृत उच्च मूल्य
- उदाहरण:- टीवी, रेडियो, कार, स्कूटर, वॉशिंग मशीन

by - M H Rabbani

अर्धटिकाऊ उपभोग वस्तुएँ
- 1 वर्ष या उससे अधिक समय तक उपयोग
- समान्यतः बहुत अधिक मूल्य नहीं
- उदाहरण:- फर्नीचर, क्रॉकरी, इलेक्ट्रिक सामान

गैरटिकाऊ उपभोग वस्तुएँ
- केवल एक बार उपयोग किया जाता है, इसलिए इसे एकल उपयोग उपभोग वस्तुएँ (Single use consumption goods) भी कहा जाता है
- अपेक्षाकृत कम मूल्य।
- उदाहरण:- ब्रेड, एलपीजी, पेट्रोल, दूध

सेवाएं
- अभौतिक या अमूर्त वस्तुएँ (Nonmaterial or Nontangible goods) जो सीधे मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करती हैं।
- उदाहरण:- डॉक्टर, वकील, शिक्षक, नौकर की सेवाएँ

पूंजीगत वस्तुएँ / Capital Goods

👉 **विशेषताएँ:-**

- सीधे मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट नहीं करती।
- अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए उत्पादक द्वारा **अचल परिसंम्पत्ति या स्थिर परिसंम्पत्ति (Fixed assets)** के रूप में उपयोग किया जाता है।
- अपेक्षाकृत उच्च मूल्य ।
- **अंतिम उपयोगकर्ता - उत्पादक**
- उपयोग से इनके मूल्य में कमी आती है।
- उदाहरण:- प्लांट और मशीनरी

by - M H Rabbani

👉 **समावेश (Inclusion / Exclusion):-**

- कई वर्षों तक उत्पादन प्रक्रिया में शामिल अचल परिसंपत्तियाँ।
- उत्पादक वस्तुओं के रूप में उपयोग की जाने वाली टिकाऊ वस्तुएँ पूंजीगत वस्तुएँ हैं, लेकिन उपभोक्ता वस्तुएँ पूंजीगत वस्तुएँ नहीं हैं।

@vidyadrishti

👉 **निवेश:-**

◆ पूंजीगत वस्तुओं पर किये गए व्यय को निवेश कहा जाता है।

👉 **महत्व:-**

(1) अधिक उत्पादन से अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता बढ़ती है।
(2) इसे भविष्य के विकास के लिए अच्छा माना जाता है।

👉 **उत्पादक द्वारा दो तरह से उपयोग किया जाता है**

- Replacement of the capital stocks
- Addition to the capital stocks

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

उत्पादक वस्तुएँ / Producer Goods

👉 **परिभाषा:-**

- उत्पादन की प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को उत्पादक वस्तुएँ कहा जाता है।

👉 **समावेश (Inclusion) :-**

(a) कच्चे माल के रूप में उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ।
उदाहरण:- फर्नीचर बनाने के लिए लकड़ी
(b) अचल संपत्ति के रूप में उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ।
उदाहरण:- प्लांट और मशीनरी

पूँजीगत वस्तु और उत्पादक वस्तु में संबंध
Relation between Capital goods & Producer goods

👉 **कच्चा माल** [Raw materials]
- उत्पादक वस्तु ✓
- पूँजीगत वस्तु ✗

कारण
- टिकाऊ उपयोग की वस्तु नहीं।
- एकल उपयोग उत्पादक वस्तु।
- उत्पादन की प्रक्रिया में बार-बार उपयोग नहीं की जा सकतीं।

👉 **स्थिर परिसंम्पत्ति** [Fixed Assets]
- उत्पादक वस्तु ✓
- पूँजीगत वस्तु ✓

कारण
- टिकाऊ वस्तु
- उत्पादन की प्रक्रिया में बार-बार उपयोग किया जा सकता है।

👉 **निष्कर्ष :-**

(1) सभी पूंजीगत वस्तुएं उत्पादक वस्तुएं होती हैं।
(2) सभी उत्पादक वस्तुएँ पूंजीगत वस्तुएँ नहीं होती हैं।

अंतिम वस्तु / Final goods

👉 **विशेषताएँ / पहचान :-**
- अंतिम प्रयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग के लिए उपलब्ध।
- उत्पादन की सीमा रेखा के पार ।

  ■

  इसका अर्थ है मूल्यवृद्धि की प्रक्रिया को पार कर चूका हो।
- इसमें कोई मूल्यवृद्धि नहीं होती है।

👉 **व्यय :-**
- इस पर किया जाने वाला व्यय, **अंतिम व्यय** कहलाता है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

Final Expenditure = Consumption Expenditure(C) + Investment Expenditure(I)

अंतिम व्यय = उपभोग व्यय **(C)** + निवेश व्यय **(I)**

F. E= C+ I

👉 **महत्त्व :-**

- GDP और GNI का आंकलन (Estimation) इसी पर आधारित होता है।

👉 **एक लेखा वर्ष(accounting year) में :-**

(1) इनका उपयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में नहीं किया जाता है।
(2) इनका लाभ कमाने के लिए पुनः बिक्री नहीं होती है ।

👉 **वर्गीकरण :-** अंतिम उपयोगकर्ता के आधार पर इन्हें दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है

(a) अंतिम उपभोक्ता वस्तु / Final consumer goods

- वे वस्तुएँ जो अंततः उपभोक्ता द्वारा अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए खरीदी जाती हैं।
- अंतिम प्रयोगकर्ता - उपभोक्ता
- जैसे:- डबल रोटी, मक्खन, घी

(b) अंतिम उत्पादक वस्तु / Final producer goods

- वे वस्तुएँ जो अंततः उत्पादकों द्वारा खरीदी जाती हैं और समान्यतः अचल परिसंपत्तियों के रूप में उपयोग की जाती हैं।
- अंतिम प्रयोगकर्ता - उत्पादक
- जैसे:- ट्रैक्टर, हार्वेस्टर

by - M H Rabbani

मध्यवर्ती वस्तुएँ

@vidyadrishti

👉 **पहचान के लिए बुनियादी मानदंड / Basic criteria for identification :-**

(i) उत्पादन की सीमा रेखा के भीतर।
(ii) अभी इन वस्तुओं में मूल्य वृद्धि की जानी है।
(iii) अभी अंतिम-प्रयोगकर्ता द्वारा उपयोग के लिए तैयार नहीं ल

👉 **व्यय / Expenditure :-**

- मध्यवर्ती वस्तुओं पर किया गया व्यय मध्यवर्ती उपभोग (Intermediate Consumption) या मध्यवर्ती लागत (Intermediate Cost) कहलाता है।

👉 **महत्व / भूमिका**

- दोहरे लेखांकन से बचने के लिए इसका प्रयोग GDP और GNI के अंकलन में नही किया जाता है।

👉 **एक लेखा वर्ष में :-**

(1) इनका उपयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में किया जाता है।
(2) लाभ कमाने के लिए पुनर्विक्रय किया जा सकता है।

👉 **उदाहरण:-** दही बनाने के लिए दूध

GVA/ GDP = Output - Intermediate cost

👉 **निष्कर्ष :-**

(क) अंतिम उपयोग के आधार पर कोई वस्तु अंतिम वस्तु या मध्यवर्ती वस्तु होती है।
(ख) एक ही वस्तु अंतिम और मध्यवर्ती हो सकती है।
उदाहरण:- घर में इस्तेमाल होने वाली चीनी - अंतिम वस्तु (उपभोक्ता)
रसगुल्ला बनाने में इस्तेमाल होने वाली चीनी - मध्यवर्ती वस्तु (उत्पादक)

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

(ग) एक ही वस्तु आंशिक रूप से अंतिम वस्तु और आंशिक रूप से मध्यवर्ती वस्तु हो सकती है।
उदाहरण:- डेयरी का दूध
(घ) राष्ट्रीय आय के आकलन के लिए अंतिम वस्तु और मध्यवर्ती वस्तु के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है।

उपभोग व्यय / Consumption expenditure

👉 किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादित उपभोक्ता वस्तुओं के अंतिम उपयोगकर्ता द्वारा वस्तुओं की खरीद पर किए गए व्यय को **समग्र उपभोग व्यय** कहा जाता है।

👉 **उपभोक्ता वस्तुओं के अंतिम उपयोगकर्ता:-**

(क) परिवार
(ख) सरकार
(ग) गैर-लाभकारी निजी संस्थाएँ
उदाहरण:- एनजीओ, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

👉 **उपभोग व्यय के घटक:-**

(1) परिवार - परिवार अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए उपभोक्ता वस्तुओं का उपयोग करता है।
(2) सरकार - सरकार उपभोक्ता वस्तुओं की खरीद,रक्षा बलों तथा मध्याह्न भोजन आदि के लिए करती है।
(3) गैर-लाभकारी निजी संस्थाएँ - दान के लिए उपभोक्ता वस्तुएँ खरीदती है।

Aggregate Consumption Expenditure = C. E by households + C. E government + C. E by NPI

कुल उपभोग व्यय = परिवारों द्वारा उपभोग व्यय + सरकार द्वारा उपभोग व्यय + NPI द्वारा उपभोग व्यय

निवेश / Investment

- पूँजी के स्टॉक में परिवर्तन को **पूंजी निर्माण** (capital formation) कहा जाता है ल
- पूँजी निर्माण या पूँजी के स्टॉक में वृद्धि को निवेश कहते हैं।

@vidyadrishti

$I = \Delta K$

I = निवेश
K = पूँजी का स्टॉक
ΔK = वर्ष के दौरान पूँजी के स्टॉक में परिवर्तन

- **निवेश के दो घटक हैं:-**
  (a) स्थिर निवेश (Fixed Investment)
  (b) माल-सूंची निवेश (Inventory Investment)

स्थिर निवेश / Fixed Investment

- उत्पादकों द्वारा **स्थिर या अचल परिसंपत्तियों या पूंजीगत वस्तुओं (प्लांट और मशीनरी)** की खरीद पर किए गए व्यय को स्थिर निवेश कहा जाता है।
- एक लेखा वर्ष के दौरान उत्पादक की स्थिर परिसंपत्तियों के स्टॉक में वृद्धि को स्थिर निवेश माना जाता है।
- इसे **स्थिर पूंजी निर्माण**(Fixed Capital Formation) भी कहा जाता है।

स्थिर निवेश (Fixed Investment) = लेखा वर्ष के अंत में उत्पादकों की स्थिर परिसंपत्तियों का स्टॉक - लेखा वर्ष के आरंभ में उत्पादकों की स्थिर परिसंपत्तियों का स्टॉक

by - M H Rabbani

👉 **स्थिर निवेश का महत्व:-**

- यह उत्पादकों की उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है।
- उत्पादन क्षमता में वृद्धि के कारण

  ⬇

  अर्थव्यवस्था में उत्पादन का उच्च स्तर प्राप्त होता है।
- उत्पादन का उच्च स्तर आर्थिक विकास की उच्च दर की ओर ले जाता है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

माल सूंची स्टॉक / Inventory Stock

👉 **इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:-**

(1) बिना बिकी तैयार वस्तुएँ
(2) उत्पादन की प्रक्रिया में अर्ध-निर्मित वस्तुएँ
(3) कच्चा माल

@vidyadrishti

👉 **माल - सूंची स्टॉक दो प्रकार का होता है:-**

(a) वांछित माल-सूची स्टॉक (Desired Inventory Stock)

- इसे **नियोजित माल सूंची स्टॉक** भी कहा जाता है।
- इसे उत्पादक अपनी वस्तु की भविष्य की मांग का लाभ उठाने के उद्देश्य से बनाए रखते हैं।
- इसके कारण **लाभ** होता है।

(b) अवांछित माल-सूची स्टॉक (UnDesired Inventory Stock)

- इसे **अनियोजित माल -सूंची स्टॉक** भी कहा जाता है।
- यह इसलिए होता है क्योंकि वस्तु की मांग अपेक्षित मांग से कम रह जाती है।
- इसके कारण **हानि** होती है।

माल सूंची निवेश / Inventory Investment

- एक लेखा वर्ष के दौरान माल-सूची स्टॉक में वृद्धि को माल सूची निवेश कहा जाता है।

माल-सूची निवेश = लेखा वर्ष के अंत में माल-सूची स्टॉक - लेखा वर्ष के आरंभ में माल-सूची स्टॉक
= एक लेखा वर्ष के दौरान माल-सूची स्टॉक में परिवर्तन

👉 **माल - सूची निवेश का महत्व:-**

(a) यह उत्पादन की प्रक्रिया में आगतों (Input) की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है।
(b) यह उत्पादक को बाजार की निम्न से संबंधित अनिश्चितता से बचाता है -
  - कच्चे माल की कीमत
  - कच्चे माल की उपलब्धता

(c) यह उत्पादकों को उनके उत्पाद की संभावित (भविष्य की) मांग को पूरा करने में सक्षम बनाता है। (तैयार माल का स्टॉक)

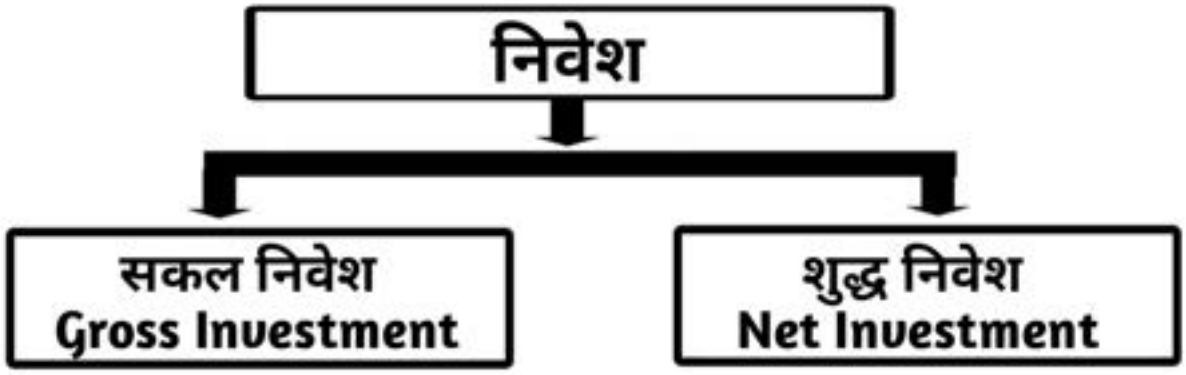

by - M H Rabbani

सकल निवेश / Gross Investment

👉 सकल निवेश में निम्नलिखित व्यय शामिल किये जाते हैं:-

(a) अचल परिसंपत्तियों की खरीद पर किया गया व्यय।

(b) माल - सूची स्टॉक पर किया गया व्यय।

(c) मूल्यह्रास या पुनः स्थापन निवेश पर किया गया व्यय।

👉 यह वर्तमान पूंजी के स्टॉक में शुद्ध वृद्धि को प्रतिबिंबित नहीं करता है।

👉 पुनः स्थापन निवेश को सकल निवेश में शामिल किया जाता है लेकिन यह पूंजी स्टॉक में वृद्धि नहीं करता है।

👉 बिना बिके माल को उत्पादकों द्वारा स्वयं पुनः खरीद लिया जाता है , इसलिए इसे माल - सूची स्टॉक में शामिल किया गया है और इसलिए इसे सकल निवेश में शामिल किया गया है।

Gross Investment = Net Investment + Depreciation
सकल निवेश = शुद्ध निवेश + मूल्यह्रास

शुद्ध निवेश / Net Investment

👉 निम्नलिखित व्यय शामिल हैं:-

(a) स्थिर निवेश

(b) माल - सूची निवेश

👉 इसमें मूल्यह्रास शामिल नहीं है।

👉 यह वर्तमान पूंजी स्टॉक में शुद्ध वृद्धि को दर्शाता है।

@vidyadrishti

Net Investment = Gross Investment - Depreciation
शुद्ध निवेश = सकल निवेश - मूल्यह्रास

👉 **शुद्ध निवेश का महत्व:-**

- इससे अर्थव्यवस्था में पूंजी के स्टॉक में वृद्धि होती है।
- पूंजी स्टॉक में वृद्धि के कारण श्रम की प्रति इकाई पूंजी की उपलब्धता बढ़ जाती है। इसलिए श्रम की दक्षता बढ़ जाती है।
- भारत जैसे विकासशील देशों में बेरोजगारी का मुख्य कारण पूंजी की कमी है। इसलिए शुद्ध निवेश रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करता है।
- यह अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है। इसलिए सकल घरेलू उत्पाद और आर्थिक विकास में वृद्धि होती है।

शुद्ध पूंजी निर्माण और उत्पादन का उच्च स्तर

👉 शुद्ध पूंजी निर्माण की उच्च दर का अर्थ है श्रम की प्रति इकाई पूंजी की अधिक उपलब्धता (मशीन के संदर्भ में)

👉 मशीनों में वृद्धि के साथ श्रम की दक्षता बढ़ जाती है, जिससे उत्पादन का उच्च स्तर प्राप्त होता है।

👉 यही कारण है कि अमेरिका जैसे विकसित देशों की श्रम क्षमता भारत जैसे विकासशील देशों की तुलना में अधिक है।

by - M H Rabbani

Depreciation / मूल्यह्रास

👉 मूल्यह्रास उत्पादन की प्रक्रिया में अचल परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी या गिरावट है।
👉 इसे स्थिर पूंजी का उपभोग (Consumption of fixed capital) भी कहा जाता है।
👉 स्थिर परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी के पुनः स्थापन के लिए मूल्यह्रास आरक्षित कोष होती है।

🔴 **मूल्यह्रास का कारण:-**

(a) सामान्य टूट-फूट
(b) आकस्मिक हानि और,
(c) प्रत्याशित अप्रचलन
- प्रौद्योगिकी में परिवर्तन के कारण
- मांग में परिवर्तन के कारण

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
@vidyadrishti

अप्रचलन / Obsolescene

प्रत्याशित अप्रचलन
Expected Obsolescene

अप्रत्याशित अप्रचलन
Unexpected Obsolescene

प्रत्याशित अप्रचलन / Expected Obsolescene

कारण :-

(a) तकनीक में परिवर्तन
- स्थिर परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी हो जाती है जब ये प्रौद्योगिकी में परिवर्तन के कारण अप्रचलित या पुरानी हो जाती हैं।
- उदाहरण:- ब्लैक एंड व्हाइट टीवी के जगह रंगीन टीवी

(b) मांग में परिवर्तन
- स्थिर परिसंपत्तियों के मूल्य में कमी होती है जब ये मांग में परिवर्तन के कारण अप्रचलित या पुरानी हो जाती हैं।
- उदाहरण:- रबर के जूतों से चमड़े के जूतों की मांग में बदलाव।

👉 उपरोक्त कारणों से अचल/ स्थिर परिसंपत्तियों का मूल्य घट जाता है।
👉 यह मूल्यह्रास का एक भाग है।

by - M H Rabbani

प्रत्याशित अप्रचलन का प्रबंधन

(a) इसका प्रबंधन बाजार स्थितियों के ज्ञान और अनुभव के आधार पर किया जा सकता है।
(b) इसका प्रबंधन मूल्यह्रास आरक्षित कोष द्वारा किया जा सकता है।

अप्रत्याशित अप्रचलन / Unexpected Obsolescene

कारण :-

(a) प्राकृतिक आपदाएँ - भूकंप, बाढ़, आग
(b) आर्थिक मंदी

👉 उपर्युक्त कारण से अचल परिसंपत्तियों का मूल्य घट जाता है।
👉 यह मूल्यह्रास का भाग नहीं है। इसके कारण होने वाले नुकसान को **पूंजीगत हानि** (Capital loss) कहा जाता है

अप्रत्याशित अप्रचलन का प्रबंधन

इसका प्रबंधन अचल परिसंपत्तियों के बीमा के माध्यम से किया जाता है।

मूल्यह्रास आरक्षित कोष का महत्व

👉 मूल्यह्रास आरक्षित कोष के अभाव में पुनः स्थापन निवेश में कमी आएगी, जिससे **सकल निवेश में कमी** आएगी।

👉 सकल निवेश में कमी के परिणामस्वरूप **उत्पादन का स्तर कम** होगा।

👉 उत्पादन के निम्न स्तर के कारण **आय और रोजगार के अवसर का स्तर भी कम** होग

👉 आय और रोजगार के निम्न स्तर के कारण **समग्र मांग में कमी** आएगी।

👉 समग्र मांग में कमी के परिणामस्वरूप **निवेश प्रेरणा में कमी** आएगी। इस प्रकार, **पुनर्निवेश में कमी** आएगी और **निवेश का एक दुष्चक्र** निर्मित होगा।

@vidyadrishti

🔴 **निष्कर्ष :-** वास्तव में उपरोक्त कारणों से अर्थव्यवस्था में आर्थिक मंदी की स्थिति उत्पन्न होगी तथा अर्थव्यवस्था **निम्न स्तरीय संतुलन के जाल** में फंस सकती है।

निम्न स्तरीय संतुलन जाल/ Low level Equilibrium Trap

वह स्थिति जब कम आय के कारण कम माँग होती है तथा कम माँग के कारण कम उत्पादन और एक बार पुनः कम आय होती है, तो इसे निम्न स्तरीय संतुलन जाल कहते हैं।

चालू पुनः स्थापन लागत/Current Replacement Cost

एक लेखा वर्ष की अवधि के दौरान अर्थव्यवस्था में सभी उत्पादक इकाइयों के लिए मूल्यह्रास का अनुमानित मूल्य चालू पुनःस्थापन लागत कहलाता है।

by - M H Rabbani

स्टॉक / Stock

👉 आर्थिक चर जिसे **समय के निश्चित बिंदु पर मापा** जाता है उसे स्टॉक कहते हैं।

👉 **कुछ महत्वपूर्ण स्टॉक चर: -**

🔹 धन 🔹 श्रम शक्ति 🔹 पूंजी 🔹 किसी देश में मुद्रा की मात्रा/आपूर्ति 🔹 बैंक जमा राशि 🔹 किसी देश की जनसंख्या 🔹 मशीनरी

प्रवाह / Flow

👉 आर्थिक चर जिसे किसी **निश्चित समय अवधि में मापा** जाता है, प्रवाह कहलाता है।

👉 **कुछ महत्वपूर्ण प्रवाह चर:-**

🔹 आय 🔹 मुद्रा का व्यय 🔹 पूंजी निर्माण 🔹 देश में मुद्रा पूर्ति में परिवर्तन 🔹 पूंजी पर ब्याज 🔹 जन्म/मृत्यु दर 🔹 निवेश 🔹 उपभोग व्यय 🔹 किसी भी वस्तु या सेवा का उत्पादन

स्टॉक और प्रवाह में संबंध

■ स्टॉक और प्रवाह एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। स्टॉक प्रवाह को प्रभावित करता है और प्रवाह स्टॉक को प्रभावित करता है।

■ पूंजी का स्टॉक जितना अधिक होगा, वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह उतना ही अधिक होगा

■ इसी तरह, आय का प्रवाह जितना अधिक होगा, लोगों के पास धन का स्टॉक भी उतना ही अधिक होगा।

अर्थव्यवस्था के प्रकार

(a) खुली अर्थव्यवस्था

🔹 एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसका शेष दुनिया के साथ आर्थिक संबंध हो।

🔹 ऐसी अर्थव्यवस्था में समष्टि स्तर पर चार क्षेत्र होते हैं।

1. परिवार क्षेत्र / Houeehold sector
2. उत्पादक क्षेत्र / Producer sector
3. सरकारी क्षेत्र / Government Sector
4. विदेशी क्षेत्र या शेष विश्व क्षेत्र /External sector or Rest of the world sector

(b) बंद अर्थव्यवस्था

🔹 ऐसी अर्थव्यवस्था का शेष विश्व से कोई संबंध नही होता है।

🔹 शेष विश्व इसमें शामिल नही।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र — समष्टि स्तर

@vidyadrishti

परिवार / गृहस्थ क्षेत्र

- इसमें वस्तुओं और सेवाओं के उपभोक्ता शामिल हैं।
- परिवार क्षेत्र (गृहस्थ) उत्पादन के कारकों (साधन) का स्वामी होता है ।
- **परिवार क्षेत्र द्वारा प्रदान की जाने वाली कारक सेवाएँ:-**
  - भूमि
  - श्रम
  - पूंजी
  - उद्यमी

उत्पादक क्षेत्र

- अर्थव्यवस्था में सभी उत्पादक इकाइयाँ या फर्म इसमें शामिल हैं।
- कारक सेवाओं के लिए परिवार क्षेत्र को कारक भुगतान करता है ।
- **कारक भुगतान (Factor payment):-**
  - श्रम —वेतन / मजदूरी
  - भूमि — किराया / लगान
  - पूँजी — ब्याज
  - उद्यमशीलता — लाभ

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

सरकारी क्षेत्र

- इसमें सरकार शामिल है-
  - **कल्याणकारी एजेंसी के रूप में**
  - **उत्पादक के रूप में**
- कल्याणकारी एजेंसी के रूप में सरकार का कार्य कानून और व्यवस्था, रक्षा आदि को बनाए रखना है।

विदेशी क्षेत्र/ शेष विश्व क्षेत्र

- इसमें शामिल है -
  - निर्यात और आयात
  - पूँजी का प्रवाह (inflow & outflow)

] घरेलू अर्थव्यवस्था और शेष विश्व के बीच

अंतर्क्षेत्रीय प्रवाह (Intersectoral Flows)

- अर्थव्यवस्था का प्रत्येक क्षेत्र दूसरे पर निर्भर करता है।
- उनके बीच वस्तुओं, सेवाओं और धन का प्रवाह होता है, जिसे **अंतरक्षेत्रीय प्रवाह** कहा जाता है।
- चूंकि सभी क्षेत्र एक दूसरे पर निर्भर हैं। इसलिए इसे **अंतरक्षेत्रीय अंतरनिर्भरता** (Intersectoral interdependence) कहा जाता है।

  - परिवार क्षेत्र वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग के लिए उत्पादक क्षेत्र पर निर्भर करता है।
  - उत्पादक क्षेत्र कारक सेवाओं के लिए घरेलू क्षेत्र पर निर्भर करता है।
  - सरकारी क्षेत्र अपने कर प्राप्ति और गैर-कर प्राप्ति(राजस्व) के लिए उत्पादक और घरेलू क्षेत्र पर निर्भर करता है।
  - उत्पादक और घरेलू क्षेत्र प्रशासनिक सेवाओं, कानून और व्यवस्था, रक्षा के लिए सरकार पर निर्भर करते हैं।
  - निष्कर्ष:- अंतरक्षेत्रीय निर्भरता अंतरक्षेत्रीय प्रवाह का कारण है।

by - M H Rabbani

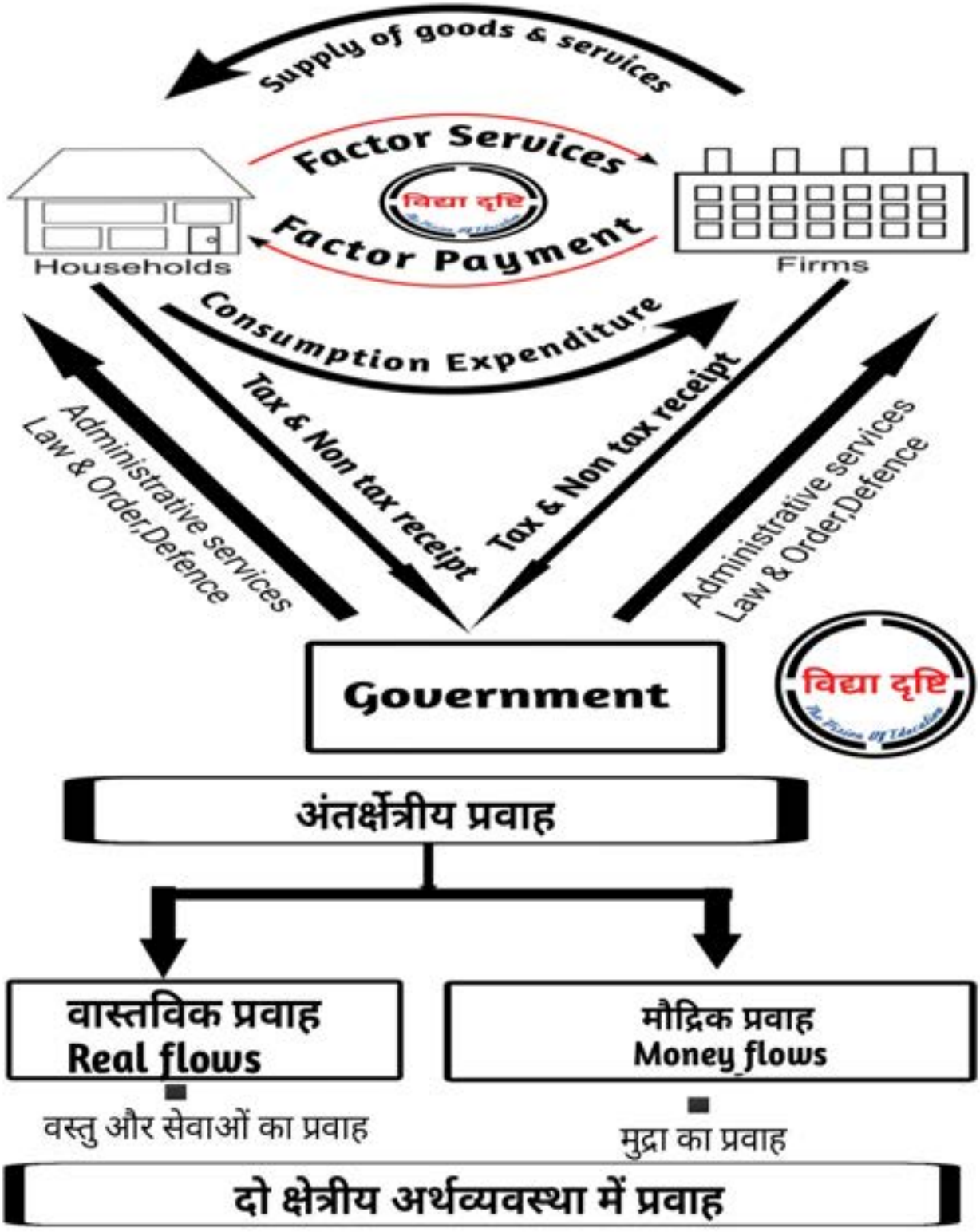

अंतर्क्षेत्रीय प्रवाह

वास्तविक प्रवाह
Real flows

- वस्तु और सेवाओं का प्रवाह

मौद्रिक प्रवाह
Money flows

- मुद्रा का प्रवाह

दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में प्रवाह

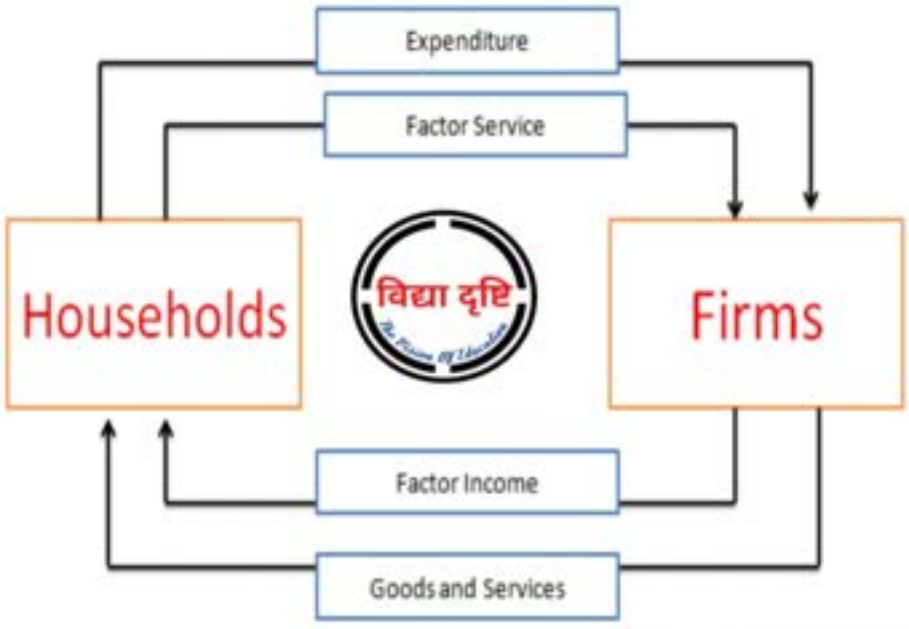

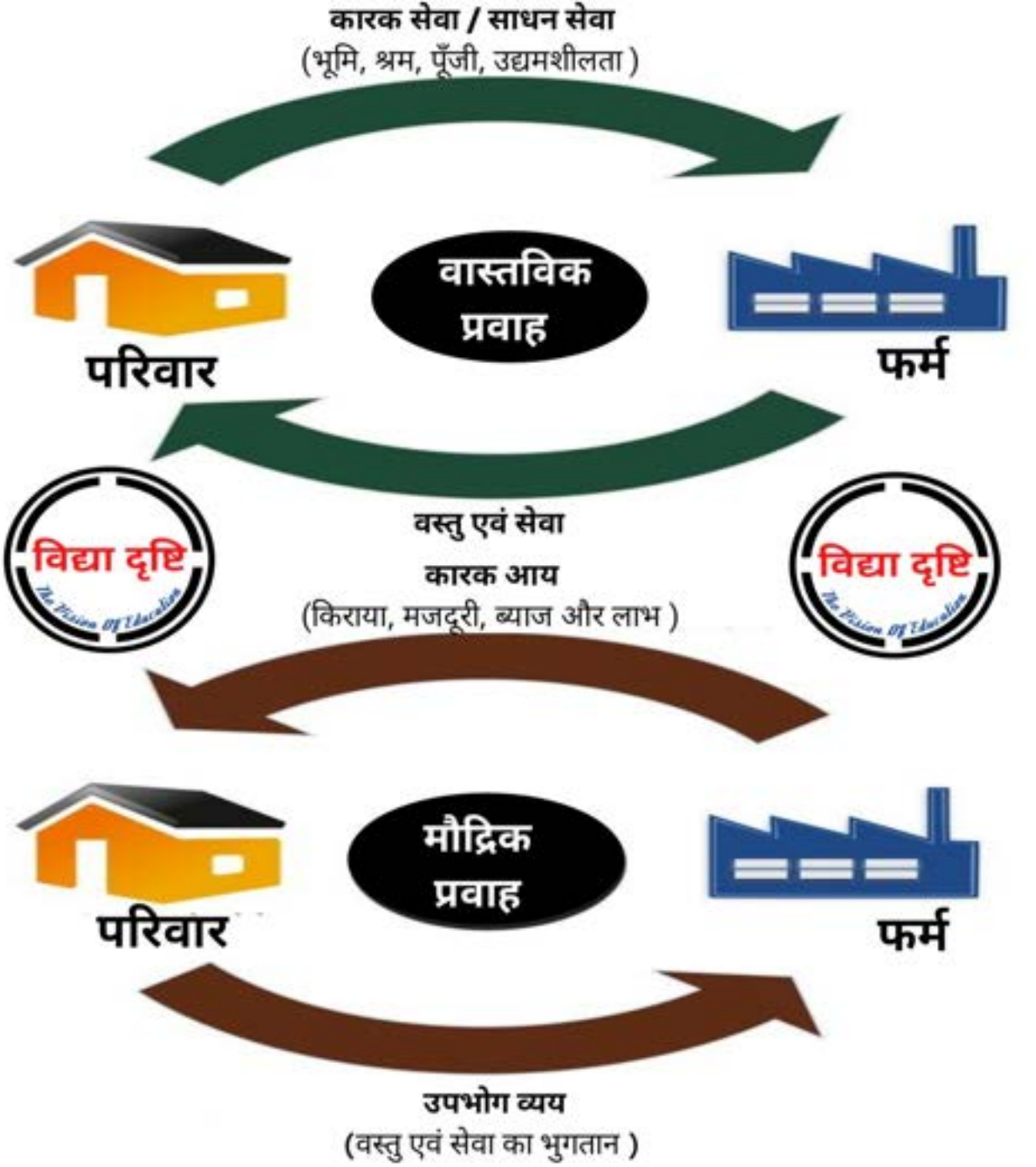

आय / मुद्रा का चक्रीय प्रवाह

👉 **अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित तीन गतिविधियाँ लगातार जारी रहती हैं:-**

(a) वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन
(b) आय का सृजन
(c) व्यय

👉 चूँकि, उपरोक्त गतिविधियों के बिना अर्थव्यवस्था की अवधारणा अस्तित्व में नहीं होगी। इसलिए इन्हें **अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा** कहा जाता है।

👉 उत्पादन, आय सृजन और व्यय की निरंतर चलने वाली गतिविधियों के प्रवाह को **आय का चक्रीय प्रवाह** कहा जाता है।

👉 चक्रीय प्रवाह की तीन अवस्थाएं होती हैं :-

(1) उत्पादन की अवस्था — मूल्यवृद्धि
(2) आय सृजन की अवस्था — उत्पादन के कारकों (साधनों) में आय का वितरण
(3) व्यय या विन्यास की अवस्था — उपभोग और निवेश व्यय

👉 आय के चक्रीय प्रवाह का न तो कोई आरम्भिक बिंदु होता है और न ही कोई अंतिम बिंदु।

by - M H Rabbani

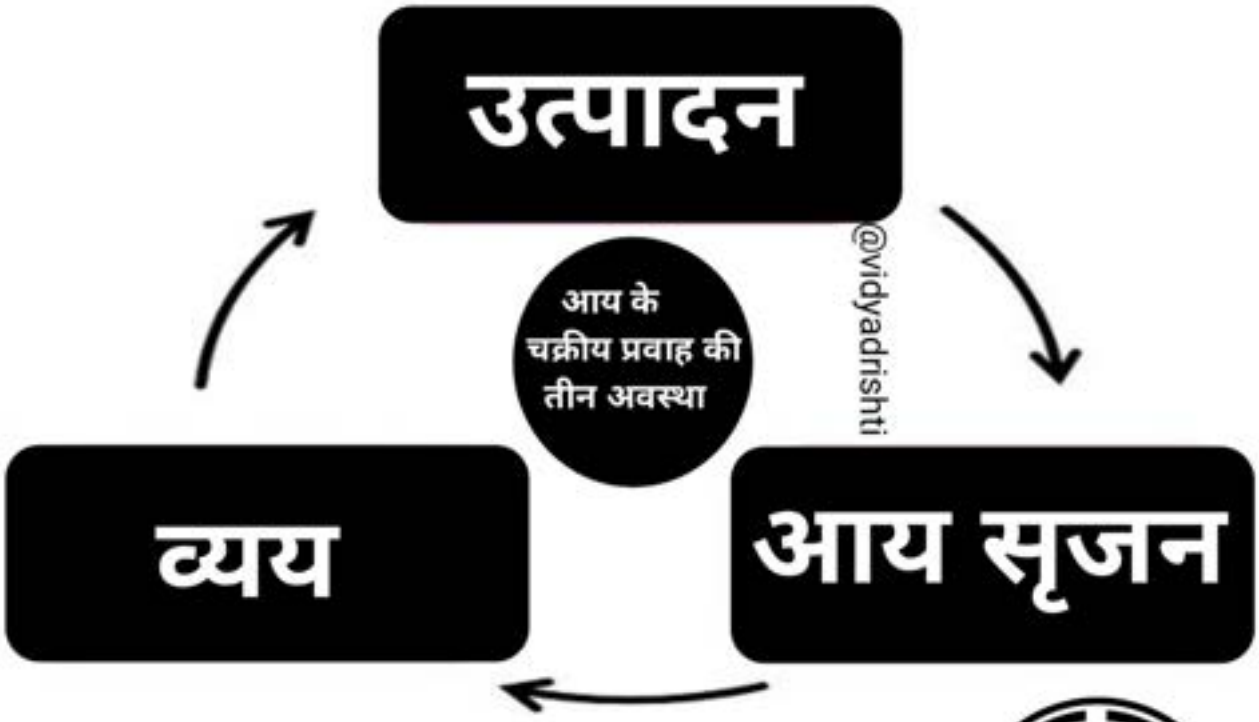

चक्रीय प्रवाह मॉडल की मान्यता

(a) अर्थव्यवस्था में केवल दो क्षेत्र।
- परिवार
- उत्पादक

(b) परिवार क्षेत्र अपनी पूरी आय खर्च कर देता है, इसलिए कोई बचत नहीं होती।
(c) बंद अर्थव्यवस्था।
- कोई आयात नहीं
- कोई निर्यात नहीं

(d) सरकार की कोई भूमिका नहीं।

चक्रीय प्रवाह का बुनियादी सिद्धांत

(a) एक दिशा में प्रत्येक वास्तविक प्रवाह के लिए, विपरीत दिशा में मुद्रा या आय का प्रवाह होता है।
(b) एक क्षेत्र की प्राप्तियाँ दूसरे क्षेत्र को किए गए भुगतान के बराबर होती हैं।

चक्रीय प्रवाह मॉडल का महत्व

(a) अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर निर्भरता को समझने में मदद करता है।
(b) राष्ट्रीय आय के अनुमान में मदद करता है।

त्री पक्षीय समरूपता

मूल्य वृद्धि = आय सृजन = वस्तुओं तथा सेवाओं पर किया गया व्यय।

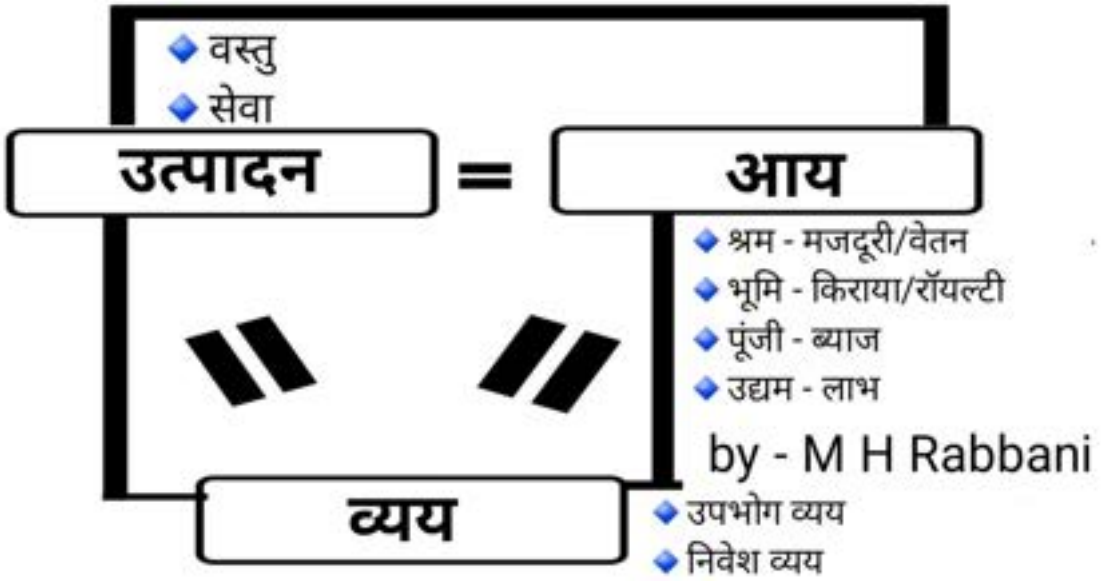

चक्रीय प्रवाह

समावेश (भरण)
Injection

चक्रीय प्रवाह का विस्तार

वापसी (क्षरण)
Leakage/ Withdrawl

चक्रीय प्रवाह का विस्तार

@vidyadrishti

समावेश (भरण)

- कुछ समष्टि चरों के स्तर में वृद्धि से अर्थव्यवस्था में उत्पादन के स्तर में वृद्धि होती है। इसे भरण कहा जाता है।
- निम्नलिखित चर को भरण के रूप में शामिल किया गया है:-
  - **(a) सरकारी उपभोग व्यय**
  - **(b) सरकारी निवेश व्यय**
  - **(c) निर्यात (विदेशियों द्वारा घरेलू उत्पाद पर व्यय)**
- इनमें से किसी भी चर के स्तर में वृद्धि का मतलब घरेलू अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं की मांग के स्तर में वृद्धि है।
- अर्थव्यवस्था में उत्पादन का स्तर बढ़ता है। उत्पादन के स्तर में इस वृद्धि से चक्रीय प्रवाह का विस्तार होता है।

वापसी (क्षरण)

- कुछ समष्टि चर के स्तर में वृद्धि से अर्थव्यवस्था में उत्पादन के स्तर में गिरावट आती है। इसे क्षरण कहा जाता है।
- क्षरण के रूप में निम्नलिखित चर शामिल हैं:-
  - **(a) बचत (उपभोग के विपरीत)**
  - **(b) सरकारी कर (सरकारी निवेश के विपरीत)**
  - **(c) आयात (निर्यात के विपरीत)**
- इनमें से किसी भी चर के स्तर में वृद्धि का अर्थ है घरेलू उत्पाद की मांग के स्तर में गिरावट और इसलिए अर्थव्यवस्था में उत्पादन के स्तर में गिरावट।
- उत्पादन के स्तर में यह गिरावट चक्रीय प्रवाह को संकुचन की ओर ले जाती है।

भरण या समावेश(चक्रीय प्रवाह का विस्तार) = क्षरण या वापसी(चक्रीय प्रवाह का संकुचन)

स्थिर चक्रीय प्रवाह

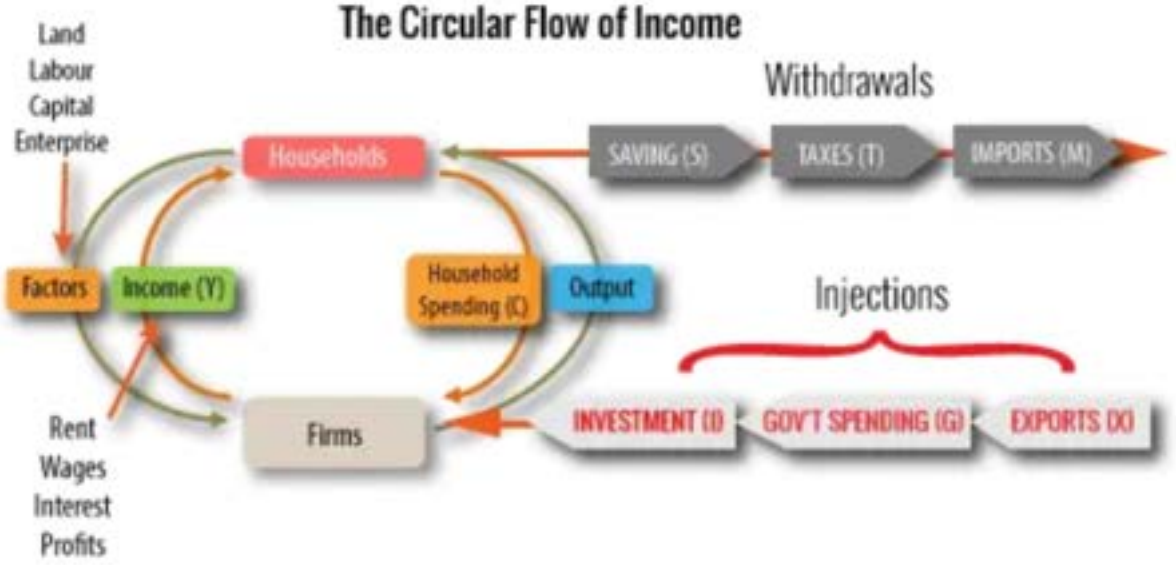

दोहरा माँग - पूर्ति संबंध

- परिवार क्षेत्र और उत्पादक के बीच संबंध।
- परिवार क्षेत्र :-
  - उत्पादक को कारक सेवाएँ का पूर्तिकर्ता।
  - उत्पादक से वस्तु और सेवाओं का माँगकर्ता।
- उत्पादक क्षेत्र
  - परिवार क्षेत्र के उपभोक्ताओं को वस्तु और सेवाओं का आपूर्तिकर्ता।
  - परिवार क्षेत्र से कारक सेवाओं का मांगकर्ता।

by - M H Rabbani